दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा–मद्रास

मई –2009

समय : 10 बजे से 1 बजे तक

दिनांक : 31/05/2009

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

एम.ए. प्रथम वर्ष परीक्षा

विषय : हिंदी (अनिवार्य) प्रश्न पत्र:3

शीर्षक : गद्य साहित्य

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 75

सूचना : 1. खंड 'क' से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।
2. सभी प्रश्नों के अंक समान हैं ।
3. खंड 'ख' अनिवार्य है ।

खंड 'क' 4x10=40

1. नाटक के तत्वों के आधार पर **स्कंदगुप्त** नाटक की विवेचना कीजिए ।
2. **बाणभट्ट की आत्मकथा** का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ।
3. आंचलिक भाषा की दृष्टि से **मैला आंचल** एक महत्वपूर्ण उपन्यास है । सिद्ध कीजिए ।
4. कहानी तत्वों के आधार पर **'करवा का व्रत'** का विश्लेषण कीजिए ।**श्रद्धा–भक्ति** में व्यक्त आचार्य रामचंद्र शुक्ल के विचारों पर प्रकाश डालिए ।
5.
6. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए –
   क) डॉ. प्रशांत का चरित्र चित्रण
   ख) निउनिया का चरित्र चित्रण
   ग) **'भोलाराम का जीव'** में व्यक्त व्यंग्य
   घ) **स्कंदगुप्त** नाटक की ऐतिहासिकता

खंड– ख

7. निम्नलिखित **गद्यांशों** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 5x7=35

क) युद्ध क्या गान नहीं है ? रुद्र का श्रृंगीनाद, भैरवी का तांडव–नृत्य, और शास्त्रों का वाद्य मिलकर भैरव संगीत की सृष्टि होती है । जीवन के अंतिम दृश्य को जानते हुए, अपनि आँखों से देखना, जीवन–रहस्य के चरम सौंदर्य की नग्न और भयानक वास्तविकता का अनुभव केवल स्च्चे वीर–हृदय को होता है ।

अथवा

भारत समग्र विश्व का है, और संपूर्ण वसुंधरा इसके प्रेम पाश में आबद्ध है । अनादि काल से ज़ान की, मानवता की ज्योति यह विकीर्ण कर रहा है । वसुंधरा का हृदय भारत के किस मूर्ख प्यारा नहीं है ।

P.T.O

www.StudyGuideIndia.com

ख) समस्त मानव जीवन का प्रवर्त्तन भाव या मनोविकार ही होते हैं । मनुष्य की प्रवृत्तियों की तह में अनेक प्रकार के भाव ही प्रेरक के रूप में पाए जाते हैं । शील या चरित्र का मूल भी भावों के विशेष प्रकार के संगठन में ही समझनी चाहिए । लोक रक्षा, और लोक जीवन की सारी व्यवस्था का ढांचा इन्हीं पर ठहराया गया था ।

अथवा

दान वीर में अर्थ त्याग का साहस अर्थात उसके कारण होने वाले कष्ट या कठिनता को सहने की क्षमता अंतर्हित रहती है । दान वीरता तभी कही जाएगी जब दान के कारण दानी को अपने जीवन निर्वाह में किसी प्रकार का कष्ट या कठिनता दिखाई देगी ।

ग) फल की भावना से उत्पन्न आनंद भी साधक कर्मों की ओर हर्ष और तत्परता के साथ प्रवृत्त करता है । पर फल का लोभ जहाँ प्रधान रहता है वहाँ कर्म–विषयक आनंद उसी फल की भावना की तीव्रता और भंदता पर अवलंबित रहता है । उद्योग के प्रभाव के बीच जब–जब फल की भावना मंद पड़ती है–उसकी आशा कुछ धुँधली पड़ जाती है तब–तब आनंद की उमंग गिर जाती है और उसी के साथ उद्योग में भी शिथिलता आ जाती है । पर कर्म–भावना–प्रधान उत्साह बराबर एकरस रहता है ।

अथवा

प्रिय का चिंतन हम आंख मूँदे हुए, संसार को भुलाकर करते हैं, पर श्रेद्धेय का चिंतन हम आँख खोले हुए, संसार का कुछ अंश सामने रखकर करते हैं । यदि प्रेम स्वप्न है तो श्रद्धा जागरण है । प्रेमी प्रिय को अपने लिए और अपने को प्रिय के लिए संसार से अलग करना चाहता है । प्रेम में केवल दो पक्ष होते हैं, श्रद्धा में तीन ।

घ) "एक मेरा पालतू बुलबुल शीत में हिंदुस्तान की ओर चला गया था । वह लौटकर आज सबेरे दिखलाई पड़ा, पर जब वह पास आ गया और मैंने उसे पकड़ना चाहा, तो वह उधर कोहकाफ की ओर भाग गया ।"

अथवा

हम पड़ोसी की हिफाजत न कर सकें तो मुल्क की हिफाजत क्या खाक करेंगे ? मुझे पूरा यकीन है कि बाहर की तो खैर बात ही क्या, पंजाब में ही कई हिंदू भी, जहां उनकी बहुतायत है, ऐसा ही सोच और कह रहे होंगे । आप न जाइए, न जाइए । आपकी हिफाजत की जिम्मेदारी मेरे सिर, बस ।

च) मेरा केस मेरे पास नहीं है, साहब दो साल से सरकार के पास है आपके पास है । मेरे पास अपना शरीर और दो कपड़े हैं । चार दिन बाद ये भी नहीं रहेंगे, इसलिए इन्हें भी आज ही उतार दे रहा हूँ । इसके बाद बाकी सिर्फ बारह सौ छब्बीस बटा सात रह जाएगा । बारह सौ छब्बीस बटा सात को मार–मारकर परमात्मा के हुजूर में भेज दिया जाएगा ।

अथवा

नहीं नहीं यह कैसे हो सकता है । कन्हैया नहीं माना, तुम्हें अगले जन्म में मेरी जरूरत है तो क्या मुझे तुम्हारी नहीं है ? या तुमभी व्रत न रखो आज ।

www.StudyGuideIndia.com

www.StudyGuideIndia.com